

राष्ट्रीय स्वरूप

हरित ऊर्जा से कृषि का भविष्य: डॉ. एनके शर्मा

कानपुर। कृषि क्षेत्र में हरित ऊर्जा के बढ़ते महत्व को रेखांकित करते हुए चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर के कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय के पूर्व अधिष्ठाता डॉ. एन. के. शर्मा ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रभावशाली विचार प्रस्तुत किए। 22 एवं 23 अप्रैल को बेंगलुरु में आयोजित 15वीं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में उन्होंने वर्चुअल रूप से मुख्य वक्ता के रूप में भाग लिया। इस दौरान उन्होंने अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी के समक्ष उभरती चुनौतियों पर प्रकाश डाला, विशेष रूप से रैंसमवेयर जैसे साइबर खतरों पर। उन्होंने बताया कि रैंसमवेयर एक प्रकार का दुर्भावनापूर्ण सॉफ्टवेयर है, जो डिजिटल डेटा को बंधक बना लेता है। इससे बचाव के लिए संदिग्ध ईमेल, वेबसाइट और अनधिकृत डाउनलोड से सतर्क रहने की आवश्यकता है।

इसके अतिरिक्त, 23 अप्रैल को हिंदुस्तान एग्रीकल्चर एवं वेलफेयर सोसाइटी द्वारा आयोजित 30 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय विंटर स्कूल ट्रेनिंग कम सर्टिफिकेट कार्यक्रम में डॉ. शर्मा ने

आमंत्रित वक्ता के रूप में ऑनलाइन प्रस्तुति दी। यह कार्यक्रम उत्तर प्रदेश की



राज्यपाल श्रीमती आनन्दीबेन पटेल जी एवं गुजरात के राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत जी के अध्यक्षता में आयोजित किया गया। अपने व्याख्यान में डॉ. शर्मा ने 'हरित ऊर्जा आधारित कृषि' की अवधारणा पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र में सौर ऊर्जा सहित वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का एकीकरण अब आवश्यक हो गया है। केंद्र सरकार की

योजनाओं के माध्यम से सौर पंपों की स्थापना में निरंतर वृद्धि हो रही है, जिससे

किसानों की ऊर्जा निर्भरता कम हो रही है। डॉ. शर्मा ने एग्रीवोल्टाइक तकनीक का उल्लेख करते हुए बताया कि इसके उपयोग से भारतीय किसानों की आय में लगभग 35 प्रतिशत तक की वृद्धि दर्ज की गई है। उन्होंने कहा कि यह परिवर्तन किसानों को केवल अन्न उत्पादक ही नहीं, बल्कि ऊर्जा उत्पादक बनने की दिशा में भी अग्रसर कर रहा है। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि कृषि विश्वविद्यालयों के अधीन

स्थापित कृषि विज्ञान केंद्र (चड्डूचह्य) किसानों को हरित ऊर्जा तकनीकों के प्रति जागरूक करने और 'फ्लैब टू लैंड' दृष्टिकोण को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। कार्यक्रम के अंत में डॉ. शर्मा ने चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर के नवनि्युक्त कुलपति डॉ. संजीव गुप्ता के प्रति आभार व्यक्त किया।

ऊर्जा प्रदाता के रूप में भी उभर रहे किसान : डॉ शर्मा

संवाद न्यूज एजेंसी

इटावा। कृषि इंजीनियरिंग कॉलेज के पूर्व अधिष्ठाता डॉ. एनके शर्मा ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर कृषि के भविष्य और हरित ऊर्जा की अनिवार्यता को लेकर महत्वपूर्ण विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि सौर ऊर्जा जैसी वैकल्पिक तकनीकों के अपनाए जाने से किसान अब केवल अन्नदाता ही नहीं, बल्कि ऊर्जा प्रदाता के रूप में भी उभर रहे हैं।

22 और 23 अप्रैल को बेंगलुरु में आयोजित पंद्रहवीं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉ. एनके शर्मा ने ऑनलाइन माध्यम से बतौर मुख्य वक्ता शिरकत की। अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उभरती चुनौतियों पर चर्चा करते हुए उन्होंने रैसमवेयर जैसे गंभीर साइबर खतरों के प्रति आगाह किया।

उन्होंने बताया कि यह एक घातक सॉफ्टवेयर है जो डिजिटल डेटा को बंधक बना लेता है। इससे बचाव के लिए उन्होंने संदिग्ध ईमेल और अनधिकृत डाउनलोड से दूर रहने की सलाह दी।

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में
इंजीनियरिंग कॉलेज के पूर्व
अधिष्ठाता ने दिया व्याख्यान
अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी
के क्षेत्र में उभरती चुनौतियों
पर भी की गई चर्चा



ऑनलाइन रूप से अपना व्याख्यान
देते डॉ. एनके शर्मा। स्रोत-स्वयं

हिंदुस्तान एग्रीकल्चर एवं
वेलफेयर सोसाइटी की ओर से
आयोजित 30 दिवसीय
अंतरराष्ट्रीय विंटर स्कूल ट्रेनिंग में
भी डॉ. शर्मा ने हरित ऊर्जा
आधारित कृषि पर व्याख्यान दिया।

उत्तर प्रदेश की राज्यपाल
आनंदीबेन पटेल और गुजरात के
राज्यपाल आचार्य देवव्रत की
अध्यक्षता में कार्यक्रम का
आयोजन किया गया था।

आसमान से बरस रही आग गिर रहा आम, फट रही लीची

आफत

■ अभिषेक सिंह

कानपुर। आसमान से आग बरस रही है। हीटवेव से इंसानों का बुरा हाल है तो हीट स्ट्रेस का प्रभाव पेड़ों पर पड़ रहा है। आम के पेड़ों में लगे छोटे-छोटे फल खुद ही टूट कर गिरने लगे हैं तो लीची के फलों में फंगस का खतरा बढ़ गया है। वैज्ञानिकों का मानना है कि अगर जल्द बारिश न हुई तो इन दोनों फल का न सिर्फ उत्पादन घटेगा बल्कि स्वाद में भी असर आना तय है।

सीएसए के निदेशक प्रसार व उद्यान महाविद्यालय के डीन प्रो. वीके त्रिपाठी ने बताया कि पिछले एक सप्ताह से लगातार मौसम 40 डिग्री

सेल्सियस से अधिक चल रहा है। लगातार तापमान अधिक रहने का दुष्प्रभाव आम व लीची पर पड़ता नजर आ रहा है। उन्होंने बताया कि लगातार 40 से 43 डिग्री सेल्सियस तापमान रहने से पौधों में पानी की कमी होने के कारण पत्तियां जलने लगती हैं। इससे विकसित हो रहे फल को आकार में छोटे रहकर समय से पहले गिरने लगते हैं। वहीं,

- अधिक गर्मी से पेड़ों में बढ़े हार्मोनल असंतुलन से गिर रहे छोटे फल
- तेज धूप से लीची को नुकसान, फंगस का खतरा कई गुना बढ़ा

हार्मोनल असंतुलन (जैसे ऑक्सिजन एवं एब्सिसिक एसिड का असंतुलन) हो जाता है, यह भी बड़ा कारण है। इससे छोटे-छोटे फल समय से पहले ही गिरने लगते हैं। वहीं, तेज धूप और अधिक

तापमान के कारण लीची के फलों की बाहरी परत तेजी से सूखती है और अंदर के हिस्से में नमी बनी रहती है। इस असंतुलन के कारण फल फटने लगते हैं। फटे हुए

लीची के फल फंगल इंफेक्शन की चपेट में आ जाते हैं। जिससे वे जल्दी सड़कर खराब हो जाते हैं। प्रो. वीके त्रिपाठी ने कहा कि सभी किसानों को इससे बचाव के लिए सुझाव दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि किसान पौधों के तने के पास पलवार बिछाकर हल्की नमी बनाए रखें। पौधों पर 0.5 फीसदी जिंक सल्फेट और 0.5 फीसदी बोरेक्स के मिश्रण का छिड़काव करें। जिससे

40

डिग्री तापमान पर
पौधों की पत्तियां
जलने लगती हैं